Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014 Available online at www.aygrt.isrj.net

वर्ग का बदलता अर्थ:

Anjali kaistha

Asst.Prof. Dayal Singh college(EVE)

सारांश - **वर्ग परिभाषा:**
मानव समाज की जटिल संरचना के कारण वर्ग को परिभाषित करना एक दुष्कर कार्य रहा है। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोश्ल साइन्स में वर्ग को इस प्रकार परिभाषित किया गया है,आधुनिक समाज में वर्ग व्यक्तियों के ऐसे समूहों को खा जा सकता है, जिसके पेशे, पैसे तथा शिक्षा की समानता, तुल्यता हो, समान जीवन शैली, विचार, भावनाएँ और व्यवहार के समान रूप हों और जो इनमें से किसी एक अथवा सभी आधारों पर परस्पर समान शर्तों पर मिलते हों तथा आदर करते हों।

प्रस्तावना-

थामसन वर्ग को एकदम अलग ढंग से परिभाषित करते हैं। वे इसे ऐतिहासिक प्रक्रिया से संबद्ध करके देखते हैं। जिसमें अनेक निराशाजनक, हिंसक तथा दृश्य रूप में असंबद्ध घटनाओं का समूह होता है। जब व्यक्ति सामान्य अनुभवों और हितों को अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध पहचानते हैं, तब वर्ग बनता है। संक्षिप्त में वे कहते हैं कि वर्ग की परिभाषा सिर्फ यही है कि लोग अपना इतिहास कैसे जीते हैं? थामसन अनुभवों तथा हितों के साथ साथ उनसे विस्तृत मानव की चेतना का भी उल्लेख करते हैं। वे विशेष ज़ोर देकर कहतें है कि हम वर्ग को तब तक नहीं समझ सकते जब तक हम इसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक रचना के रूप में नहीं देखते।

वर्ग चेतना किसी भी वर्ग के विषय के स्वरूप और बोध के लिए आवश्यक तत्व है। वर्ग चेतना के अभाव में वर्ग हितों का ज्ञान संभव नहीं है और यहीं इस ज्ञान के अभाव में वर्ग-संघर्ष, जो सामाजिक विकास तथा प्रगति के लिए अनिवार्य है, एकदम अकल्पनीय है। इस प्रगति का लाभ सभी को मिले, समाज में किसी भी प्रकार का शोषण न रहे इस भावना ने उसकी चेतना को प्रक्षालित करके प्रशस्त किया है।

समान्यतः वर्ग विभाजन प्रत्येक समाज में ऊँच-नीच वर्ग पाये जाते हैं। और सामाजिक दृष्टि से यह तीन वर्गों में विभक्त हो जाते हैं- उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। डॉ० सुखवीर सिंह ने इन वर्गों को इस प्रकार स्पष्ट किया है- 'पहला वर्ग वह है, जिसके पास पूंजी है और वह इसी के बल पर बुद्धि और श्रम क्रय करता है तथा उत्पादन के लाभ का एक बड़ा हिस्सा बिना करे धरे खा जाता है। दूसरा वर्ग मध्यम वर्ग या श्रमिक वर्ग केलता है जो अपनी बुद्धि और शारीरिक श्रम के जरिये ही अपनी जीविका कमाता है। तीसरा वर्ग निम्न वर्ग है जिसके पास केवल श्रम है| किन्तु धीरे धीरे वह श्रम के महत्व को समझता है।' इस प्रकार के वर्ग विभक्त समाज में उच्च वर्ग (पूंजीपति वर्ग) समाज में अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए अनेक तरह के षड्यंत्र रचता है। समाज में अन्य वर्गों के बदलते अर्थ को दबाकर यथास्थिति बनाए रखने के लिए पूंजीपति वर्ग की खरीद फरोख्त चलती रहती है। इससे ही सामाजिक असंगति सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रीयता आदि के मसले खड़े होते हैं।

समाज का विभाजन मूल रूप से अर्थ की असंगतियों के अनुरूप हुआ है। कुमार कृष्ण ने अर्थ के आधार पर इस प्रकार की सामाजिक असंगतियों का मूल कारण आर्थिक विसंगतियों को ही माना है। अर्थ के अनुरूप वर्ग के बदलते अर्थ को स्वीकार करते हुये वे लिखते हैं, "लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता जिस अनुपात में सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विसंगतियाँ बढ़ी उससे वर्ग-भेद तथा जातिगत भेदभाव क्रमश: और व्यापक पैमाने पर विकसित होते गए। सत्ता तथा संपति को एकांतिक भाव से भोगने की लालसा बढ़ती गई, इसका परिणाम यह हुआ कि जहां एक ओर नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ वहाँ दूसरी ओर चरित्र की गिरावट भी हुई। इस प्रकार जन-मानस में मोहभंग की स्थिति का आविर्भाव हुआ। आर्थिक संघर्ष से जन-मानस में मानसिक उलझन, द्वंद, बिखराव और टूटन को जो जन्म मिला वह उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। शोषक और शोषित के बीच खाई चौड़ी होती गई। आज़ादी के 40 वर्ष बाद भी उसमें कोई बदलाव नहीं आया। शोषित वर्ग के अंतर्गत जहां एक ओर निम्न श्रेणी के लोग आते हैं, वहीं पर मध्य वर्ग के लोग भी आते हैं जो हमेशा पूँजीपतियों के आगे अपना शोषण होते देखर भी असहाय देखता रह जाता है। इन प्रतिकूलताओं में भी जागरूक साहित्यकार निरंतर साहित्य को सही दिशा की ओर उन्मुख रखता है। सामान्य-जन के मानस में विकसित हो रही चेतना अपने अधिकारों के लिए अन्याय,अत्याचार,भ्रष्टाचार तथा सामाजिक असंगतियों से सीधा संघर्ष करती है। वास्तव में जन मानसोंमें न्याय के रूप में पैदा हुई संघर्ष चेतना जिन शक्तियों से टकराती है,उनका मूल आधार पूंजी पर टिका है। डॉ० नगेंद्र ने 'संघर्षचेतना' को 'वर्ग-संघर्ष' की संज्ञा देते हुएस्पष्ट किया है कि "यह वर्ग संघर्ष आर्थिक,सामाजिकऔर प्रशासनिक परिस्थितियों का आधार कारण और नियामक तथा अंतत: संस्कृति का भी आधार है। इसलिए साहित्य का मूलाधार भी वर्ग-संघर्ष ही है।" जन-मानस में चेतना जागृत करना साहित्य कि अनिवार्य शर्त इसलिए भी है,जिससे वह सामाजिक अंतर्विरोध की सारी स्थितियों को उजागर कर लोगों को उसके भिन्न-भिन्न पहलुओं पर सोचने विचारने की प्रेरणा दी जा सके। इसी आधार पर शोषित वर्ग को शोषक वर्ग के षडयंत्रों से पूर्ण परिचित कराना साहित्य का कार्य है। हिन्दी साहित्य कोश में, 'समाज में शोषक और शोषित,बुर्जुआ और सर्वहारा,पूंजीपति और श्रमिक इन पर संघर्षरत दो वर्गों की सत्ता मानता है।' अतः निम्न तथा मध्य वर्ग की चेतना को जागृत करना आवश्यक है।

दीपयान बोस के अनुसार, 'समाजवाद,वर्ग समाज और वर्ग विहीन समाज केबीच का एक लंबा संक्रमणकाल है,इस दौरान समाज में वर्ग मौजूद रहते हैं और इसलिए,जाहिर तौर पर वर्ग संघर्ष भी लगातार जारी रहता है। समाजवाद एक स्थायी,समरूप या समकालीन सामाजिक-आर्थिक संरचना नहीं होती। समाजवादी समाज व्यवस्था के अंतर्गत एक ही साथ कई सामाजिक-आर्थिक संरचनाएँ मौजूद होती हैं। इसमें समाजवाद की संक्रमणशीलउत्पादन प्रणाली के अतिरिक्त पूंजीवाद और यहाँ तक कि (पिछड़े हुए देशों में समाजवादी क्रांतियाँ होने पर) प्राक्पूंजीवादी उत्पादन-प्राणली भी मौजूद होती है। समाजवादी संक्रमणकालमें पूर्ववर्ती पूंजीवादी समाज की विचारधाराएँ,मूल्य-मान्यताएँ,सामाजिक संस्थाएं, संस्कृति आदि अधिरचना के अवयव लंबे साम्य तक मौजूद रहते हैं और समाजवादी समाज में काफी लंबे साम्य तक कायम रहने वाला छोटे पैमाने का पूंजीवादी उत्पादन लगातार ऐसे बुर्जुआमूल्य-मान्यताओं-विचारों को जन्म देता रहता है जो पूंजीवादी पुनर्स्थापना कानया भौतिक आधारतैयार करते रहते है।'अतःपूंजीवादी पुनर्स्थापना की आर्थिक व्यवस्था कितना ही विकसित क्यों ना हो जाए परंतु वह स्थायी नहीं हो सकती। अंतत: उसका पतन आवश्यक है।

हिन्दी कथा साहित्य में वर्ग का बदलता अर्थ प्रेमचंद युग से ही पाया जाने लगा था। रमेश उपाध्याय ने जब लिखना प्रारम्भ किया उस साम्य वर्ग-विभक्त भारतीय समाज का चरित्र खुलकर सामने आने लगा। स्वतंत्रयोतरसामाजिक व्यवस्था में व्यापतविषमताओं के कारण समाज का वर्ग विभक्तरूप ही रहाहै,जिसका स्वरूप आज़ादी के बाद थोड़ा बदला अवश्य परंतु उसकी मूल नीतियों तथा गतिविधियों में कोई अंतरनहीं आया। यही कारण है कि,'आजएक युग के सारी अशांति का सम्पूर्ण श्रेयअत्याचारी साम्यवादीयों तथा शोषणकारी पूंजीवादियों का है।'वर्तमानसमयमें भी शोषित पीड़ित श्रमिक वर्ग पूर्ववत शोषण का

शिकार हो रहा है। रमेश उपाध्याय अपने समाज के प्रति प्रतिबद्ध हैं। उनका जुडाव शोषित पीड़ित श्रमिक जनता से है। वह धनवान वर्ग अथवा जमींदार वर्ग द्वारा उत्पन्न सामाजिक अंसंगतियों के विरुद्ध जन-जन के जुझारू चेतना विकसित करना चाहते हैं। अतःलेखक की बढ़ती सहानुभूति ने उसे नयी स्फूर्ति और शक्ति प्रदान करने का यत्न किया।

'परतंत्र भारत में भारतीय-जनजीवन और समाज में साम्राज्यवाद,सामंतवाद और पूंजीवाद का शोषण-चक्रएक साथ चलता रहा है। देश के सामंतवादी जागीरदार,जमींदार,मालगुज़ार तथा पूंजीवादी शासक के सहायक बनकर श्रमिकों तथा कृषकों व सामान्य जनता के शोषण में रत थे।'इस प्रकार भारतीय जनता,कृषकऔर मजदूर दुहरे-तिहरे शोषण का शिकार बनी,जीवन-यापन को मजबूर थी। ज्यों-ज्यों समय बदलता गया त्यों-त्यों भारतीय जनता (किसानों और मजदूरों)की सोच में भी बदलाव आता गया। रमेश उपाध्याय समाजवाद के विरोधी हैं इसलिए उन्होनें 'प्रोढ-पाठशाला', 'दूसरीपवित्रा', 'बराबरी के खेल' आदि कहानियों में ग्रामीण किसानों के बदलते रूप को दिखाया है। ग्रामीण किसान जोअब तक जमनीदारों के शोषण का शिकार थे अब उनके विरुद्ध आवाज़ उठाने में भी हिचकिचाते नहींहैं। उनमें आक्रोश है जमींदारों के खिलाफ। गाँव के जमींदारों ने गरीब किसानों का इतना शोषण किया है। जिसके कारण जो कृषक अब तक जीने का अर्थ भुलाए बैठे थे वह अब शिक्षित वर्ग के कारण इस अर्थ को समझने लगे हैं। 'प्रोढ़-पाठशाला' कहानी में कृषकों को वास्तवमें कैसे जिया जाता है इस बदलते अर्थ को बलबीर के शब्दों में दिखया गया है। 'लोग सदियों से जिस तरह जीते आए हैं,उसी तरहअब औरनहीं जीना चाहते। लेकिन किसी और तरहसे कैसे जिएँ। यह इन्हे नहीं मालूम। दूसरों से पूछते हैं,तो कोई उन्हे भगवान के भरोसे चुपचाप बैठे रहने को कह देता है,कोई भाग्य केसहारे सब कुछ सह जाने के लिए। कोई इन्हे कॉग्रेस का तख़्ता पलट कर जनता पार्टी या लोकदल के हाथ मजबूत का उपदेश पिलाता है,तो कोई कॉग्रेस से ही आस लगाए रखने की बात करता है। इधर कुछ लोग यहाँ रजनीश और साईं बाबा के भक्त भी बन गए हैं और गुलाबी--गेरुए वस्त्र पहनकर गले में अपने-अपने भगवानॉके पेंडुलम लटकाए घूमते हैं।वे भी पढे लिखे हैं और अनपढ़ों को ज्ञान देते रहते हैं। लेकिन सबका कहना एक ही है;तुम्हारे हाथ में कुछ नही है,तुम कुछ नहीं कर सकते।तुम्हारी समस्याएँ हल करने कोई ऊपर वाला ही आयेगा। चाहे लखनऊ और दिल्ली से आए,चाहे पुना और शिर्डी से,चाहे किसी ओर बैकुंठ धाम से। लेकिन ये अनपढ़ गरीब लोग अब ऊपर वालों से निराश हो चुके हैं। और खुद ही कुछ कर गुजरना चाहते हैं। इसलिए क्या कुछ किया जा सकता है यह जानना इनकी जरूरत है और यह पाठशाला इनकी इस जरूरत को पूरा करने का एक माध्यम है।' अतः रमेश उपाध्याय ने इस कहानी में बलबीर द्वारा खोली गई प्रोढ़-पाठशाला में गरीब किसान अंधविश्वास,नियतिवाद तथा आडंबरों आदि से ऊपर उठकर कैसे जिया जाता है। इस स्थिति को उजागर किया है। परंतु जमींदारों को कृषकोंका शोषण करने की आदत थी।अतः वह प्रोढ़-पाठशालाको बंद करने की धमकी देते हैं। तब बलबीर की अम्मा चिल्लाकर बोलती है, 'हाँ-हाँ मैं कह रही हूँ,जाओ तुम सब यहाँ से। तुम्हारा दिया हुआ खाते हैं जो धौंस देतेहो?जाओ,पेट भर के लगाई बुझाई करो उसके पास जाके,जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है। और यह कह देना,वह नीचे तक का ज़ोर लगा ले,पाठशाला चलेगीऔर यहीं चलेगी अपना काम पड़ता है तो राजपूत-राजपूत करते हुए आते हो नहीं तो हम तुम्हारे लिए नीच-कमीन है।सीधा-सवैया देते रहो,दान-दक्षिणा डालते रहो,गमी-शादी में इनकीफौज को खिलते रहो,कसूर-बेकसूरइनकी पंचायत के डाँड भरते रहो,तब तो ठीक है,लेकिन जब हमारी गरज पड़ेगी तो कोई चिरी उंगली पर मूतने नहीं आएगा।' बलबीर की माँ अनपढ़ है परंतु वह प्रोढ़-पाठशालाके महत्व को समझती है तथा जमींदारों की चालों को भी। अगर सारा गाँव शिक्षित हो जाएगा तब जमींदारों की कैसी हालत हो जाएगी। इसी कारण वह जमींदार के खिलाफ आवाज़ उठाती हुई उसके लठैतों को भगा देती है। रमेश उपध्याय ने इसी कहानी में तीसरी पीढ़ी (बलबीर की भतीजीपिंकी)में जमींदारों के खिलाफ जागृत चेतना को दिखाया है। 'चौबेसिंह कोई हौआ है जो हमें खा जाएंगे?उनके पास बंदूकें हैं,सो तो ठीक,पर यह तो देखो कि उनकी पाल्टी में आधे से ज्यादा गाँव हैं। तभी तो चौबे सिंह की सामने आकार कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ती।.....वे नहीं चाहते कि दूसरा कोई पढे-लिखे। जानते हैं कि दूसरे पढ़ गए तो इनकी सारी पोल-

पट्टी खोल देंगे। खोलने ही लगे हैं। और इसी बात की अड़ है। कुछ ज़ोर तो चलता नहीं,सो मज़ाक उड़ाया करते हैं;काग पढ़ाये पींजरापढ़ी गयेचारों वेद,जब सुधिआयीकुटुमकीरे तोरहे ढेढके ढेढ।गली देकर कहते हैं;पढ़-लिख के मनिस्टर बन जाओगे क्या?इकले-दुकले कोई मिल जाए धमकाते भी हैं;राज-राजी मान जाओ,नहीं तो सारी पढ़ाई-लिखाई ऐसीतैसी में घुसेडदेंगे। लेकिन बलबीर चच्चाकी बात सबने गांठ बांध राखी है कि बिना विद्या नर पसूकहावै। इसलिएअब तक कोई झगड़ा नहीं हुआ,नहीं तो अब तक जाने कितनी फ़ौजदारियाँ हो गई होतीं। लेकिन बामन,ठाकुर फ़ौजदारी करने पर उतारू हैं। बात यह है चच्चा कि जबसे प्रोढ़-पाठशालाखुली है,बमनोंका सीधा-सवैया कम हो ज्ञ है और ठाकुरों का दबदबा कम होता जा रहा है। ऊपर से चाहे अब कुछ भी न बोले,पर मन में उनके लिए किसी के भी इज्ज़त नहीं रही है। दबी जबान से ही सही,लेकिन चौबेसिंह के खेतों पर काम करने वाले मजदूरों ने सरकारीरेट की बातचीत शुरू कर दी हैऔर मार-पीट,गाली-गुफ्तार के तो एकदम खिलाफ होगएहैं। और ठीक भी है,मजदूरी करते हैं,कोई आबरू थोड़े ही बेचखायीहै.....।' अतः गाँव में कृषकों के बच्चे बचपन से ही जमींदारोंके शोषण और अत्याचार को देख रहे होते हैं। परंतु जैसे-जैसे गांवों में शिक्षा का प्रभाव बढ़ता गया वैसे ही इन बच्चो में भी अपने अधिकार के प्रति चेतना जागृत हुई। अर्थात समाज में उनको कैसे-कैसे अधिकारमिलने चाहियेइस स्थिति से परिचित हो गए। शिक्षा के प्रभाव से मजदूर वर्ग सरकारी रेट की मांग करने लगा है। 'प्रोढ़-पाठशाला' कहानी में यह स्थितिस्पष्ट हो चुकी है। 'बराबरी का खेल' कहानी में इस स्थिति को उठाया है। जब गावों के कृषक मजदूर सरकारी रेट की मांग करते हैं तब जमींदार को उनके आगे घुटने टेकने पड़ते। 'जब आधी पकी हुई खेतों में पड़ी हो और आधी कटकरख़लिहानों में पड़ी हो,हड़तालका क्या मतलब होता है यह सारे गाँव ने पहली बार समझा था। मिर्च की भस दूर-दूर तक फ़ेल गई और ठाकुर साहब को कटैया मिलना मुश्किल हो गया था। ठाकुर साहब को पहली बार झुकना पड़ा था और पाँच रुपए मजदूरी देनी पड़ी थी।'इस प्रकार मजदूर वर्ग ने जब विद्रोह किया तो जमींदार को उसके आगे झुकना पड़ा। गांवों के मजदूर और कृषक जमींदार के शोषण से परिचित हैं। रविदत्त के शब्दों में, 'अन्याय तभी होता है जब अन्याय कोसहन किया जाता है।' धीरे-धीरे मजदूरों में जागरूकता आ रही है। जिससे वह अपने ऊपर हुए अत्याचार और अन्याय को समझ रहे हैं। इस स्थिति को 'दूसरी पवित्रा' कहानी में पात्र के माध्यम से दिखाया गया है। जो की जमींदार के खिलाफ बोल रहा है। 'चंदा दिया हमने और पंचायती बैठक में दरबार लगता हैबच्चूबाबू का। पेट काटकर पैसा हम देते हैं और शान बढ़ती है बच्चूबाबू की।एमेलेऔर अफसर माल खाते हैंहमाराऔर दोस्ती करते हैं बच्चूबाबू से। तभी न बच्चूबाबू ने सरकारी ट्यूबवैल अपने फार्म पर लगवा लिया और ट्यूबवैलसे बिजली लेकर कारख़ाना खड़ा कर लिया। धान कूटने और रुई धुननेकी माशीनें चल रही हैं,ईख पेरनेका कोल्हू चल रहा है,आटेकीचक्कीचल रही है। तिल-सरसों पेरने की मशीन आने वाली है।ट्रैकटरभी तो बीडीओ को माल-खिला-खिलाकर लिया है।चंदे का फायदाकिसे हुआ।'अतः कहानी में किसान मजदूर वर्ग जमींदार की चालाकियों को समझता हुआ ही यह सब कह रहा है। समय में परिवर्तन के साथ रमेश उपाध्याय के किसान,मजदूर पत्रों में भी बदलावआ गया। अब वह अन्याय नहीं सहन कर रहा है वरन उसके खिलाफ आवाज़ उठारहा है।

गाँव में जिस तरह किसान और मजदूर वर्ग जमींदारों के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं उसी प्रकार शहरों में भी निम्न वर्गीय लोग उच्च अधिकारियों के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं। इस स्थिति को रमेश उपाध्याय ने 'रोशनी', 'हवा', 'नशा' और 'पानी की लकीर' आदि कहानियोंमें पत्रों के माध्यम से दर्शाया है। 'रोशनी' कहानी में गरीब बस्ती में रहने वाले आदमी का सरकार पर रोष, 'सरकार कहती है किहम हजारों साल से अंधेरे में चलते आए हैं और अंधेरे में चलने ही उचित है। दिन की रोशनी ने हमारी आदत बिगाड़ दी है। इसलिए हम रात में सड़कों पर रोशनी की मांग करने लगे हैं। पर यह गलतहै। हमें अंधेरे में भी चलने का सनातन अभ्यास बना लेना चाहिए और इसके लिए हमें दिन में भी अपनी सड़कों पर अंधेरा रखना चाहिए। और.....जब वह आदमी मुख्य सड़क पर पहुंचा और उसनेदेखा किसड़क पर बहुत से लोग अंधेरे में ठोकरें खातेएक-दूसरे से टकराते,गिरते-पड़ते,लड़ते-झगड़ते चले आ रहे हैं। उस आदमी को बड़ा गुस्सा आया और वह ज़ोर से चिल्लाया,मूर्खों!यह साजिश

है,इसे समझो।"अतः गरीब मजदूर भी सरकार कीचालाकियों से परिचित हैं। जैसे उसने अपने इलाके में बिजली की मांग की वैसे ही सरकार की भ्रष्ट कर्मचारी परेशान हो उठे। "इनहोनें पहले तो कभी भी अपनी सड़क पर रोशनी की मांग नहीं की,लगता है कोई इन्हे भड़का रहा है।" यह बात सही है किजैसे ही मजदूर वर्ग में चेतना जागृत हुई वैसे ही पूंजीपतिवर्गमें संकट कीघड़ी आगई। 'मिट्टी' कहानी में भी मजदूर वर्ग में पूंजीपति वर्ग के प्रति आक्रोश है। जिसने उससे मजदूरी का साधन छीन लिया है। "मैं उन माटीमिले मालिकोंकी कब्र खोदना चाहताहूँ जिनहोने मुझे जीते-जी मार डाला है।"ऐसीही स्थिति 'हवा' कहानी के पात्र की है। तथा 'पानी की लकीर' कहानी के कर्मचारियों की है। जो किसमय की मांग को पहचानते हुए अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं।

रमेश उपाध्याय ने जो कथा-साहित्य लिखा उनमें वह सामाजिक वर्ग-व्यवस्था से उत्पन्न असंगतियों को को अपने कथा-साहित्य का विषय बनाते हैं। लेखक उसके लिए पूंजीपति वर्ग को ही दोषी नहीं मानता बल्कि अपने प्रति किए जा रहे अन्याय को चुपचाप सहन करने वाला आमजनता को भी बराबर का दोषी मानता है। इस बात को रमेश उपाध्याय ने 'कामधेनु' कहानी में 'कामधेनु' गाय के माध्यम से दिखाया है। डॉक्टर को कामधेनु के साथ पूरी सहानुभूति है परंतु गुस्सा भी है कि न चाहकर भी हंटरोंऔर चाबुकों की पीड़ा को सहती है। 'राज्यलक्ष्मी तुम्हे इसी तरह मार-पीटकर तुमसे काम भी लेती रहेगी और करोडो लोगो को यह विश्वास भी दिलाती रहेगी कि वे सबसे बड़ी गो भक्त है। पिछवाड़े की और गंदगी में ही सही, लेकिन तुम उनकेमहल में रहती हो, यह बात सब लोगो को मालूम है। स्टेट की सील पर सनदों पर, झंडो पर - सब जगह तुम्हारा चित्र और नाम अंकित है। यह स्टेट तुम्हारे नाम से जानी जाती है। लोगो को विश्वास है कि यहा राज्यलक्ष्मी नहीं, तुम शासन करती हो - तुम हंटरों और चाबुकों से ही सही,लेकिन इस बात से तुम कैसे इंकार कर सकती हो कि यहा रोज तुम्हारी पूजा होती है? बोलो! अतः इस कहानी में पूंजीपति वर्ग को 'कामधेनु'गाय पर अत्याचार करते दिखाया गया है परन्तु डॉक्टरके शब्दो में 'कामधेनु' के ऊपर खीझ है जो कि हंटरों की मार चुपचाप सहतीहै और अन्ततः राज्यलक्ष्मी की सारी इच्छाओ की पूर्ति भी करती। अतः रमेश उपाध्यय ने इस कहानी में अत्याचार सहने वाले को अधिक दोषी माना है।

वर्त्तमान व्यवस्था में आम आदमी की उपयोगिता इससे अधिक नहीं की वह ऊसके उत्थान एंव यथास्थिति बनाए रखने के लिये पशुवत श्रम करता रहे। अपने ही अधिकारो के प्रति उदासीन रहकर शोषण का शिकार बनाते जाना दया नहीं दीनता है। लेखक ने 'बदलाव से पहले' कहानी की नौकरानी जानकी और 'दूसरी आजादी' कहानी की नौकरानी मंगो को मधयम वर्ग के जाल में फंसे और दयनीय अवस्था में जी रहे (नौकरानियों) निम्न वर्ग को बाहर निकाला है। इन पात्रो में भी अपने मालिकों के प्रति आक्रोश है जो की इनकी मजबूरियों को नहीं समझते हैं। 'बदलाव से पहले' कहनी की जानकी के शब्दो मे 'खामखा चिल्लाने का कोई काम नहीं बाबू जी।हम किसी के गुलाम नहीं है।' इसी तरहदूसरी आजादी की मंगोके शब्दो मे जो की मंजूरी की मांग करती है। 'परतनखा तो अपनी लूँगी बाबू जी।' कह कर मंगो ने श्रीमती विश्व कान्त को उत्तर दिया, 'और भैंनजी,अपनी उतरन देकर समझो की तनखा बराबर हो गई,सो नहीं होगा। अपने कपड़े तुम शौक से ले लो। दिल्ली के हिसाब से पूरी तनखादो,कपड़े मैं खुद खरीद के पहन लूँगी,और तुम से अच्छे पहन लूँगी।' अतः इस कहानियों के पात्रोंके माध्यम से लगता है किमध्यमवर्गीय परिवार भी निम्नवर्ग का शोषण करते हैं। परंतु निम्नवर्गीय स्त्रियाँ भी अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठा रही हैं।

रमेश ने कथा-साहित्य में मध्य वर्ग के बदलते रूप को कहानियों के माध्यम से दिखाया है। वर्तमान समय में मध्यवर्गीय लड़कियों में भी उच्च वर्ग के बढ़ते प्रभाव के कारण परिवर्तन आया है और वह भी उच्च वर्ग में अपना स्थान पाना चाहती हैं। 'शंखध्वनि की कथा' कहानी की पात्रा कंचन के माध्यम से यह स्थिति दिखाई देती है। कुमारी कंचन जीजा जी के घर आकार रहने लगी तो उनकी यह धारणा में थोड़ा परिवर्तन हुआ। जीजा जी एक समृद्ध परिवार के सुंदर युवक थे और अच्छी-सी नौकरी करते थे। ऊपरी आमदनी का हिसाब नहीं बैठता था,लेकिन वे एक बड़ा ही फायदेमंद-बिजनेस करते थे। वे लेखक थे और

'राजनीतिक विषयों के लेखक थे। उनके राजनीतिक लेख की बड़ी से बड़ी पत्रिकाओं में छपते थे। वे अँग्रेजी की तीन चार देशी विदेशी पत्रिकाएँ देखकर दो घंटे में एक लेख बना डालतेथे और उन लेखों का जो परिश्रमिक हरमहीनेउन्हें मिलता,वह उनकीतनख्वाह से भी दूना होता था। बड़ी बड़ी राजनीतिक हस्तियों से परिचय होता संपर्क बढ़ता,बड़े-बड़े समारोहों में बुलाये जाते,वह अलग। इसलिए उनके घर में किसीचीज़ की कमी नहीं होती थी और बाहर मान-सम्मान बहुत था। कुमारी कंचनने देखा कि जीजा जी जैसा पति पाकर जीजी धन्य हो गई है। अतः उन्होनें आदर्श पति की कल्पना अब इस रूप मेंकी किउसमें पिताजी के गुणों के साथ-साथ जीजा जी के गुण भी हों।"अतः इस प्रकार कहानी के माध्यम से रमेश उपाध्याय ने समाज में उच्च वर्गके लोगकिस प्रकार तरक्की करते हैं यह दिखायागया है दूसरी ओर मध्यमवर्ग उनकी चकाचौंध से ऐसाप्रभावित होता है कि उन्हें अपना आदर्श मानने लगता है। मध्य वर्ग उच्च वर्ग के प्रभाव के कारण बादल रहा है।

मध्यम वर्ग के नवयुवक और नवयुवतियोंके बदलाव को 'द्वीपदंड' उपन्यास में मीनाक्षी के माध्यम से दिखाया गया है। 'लोग चाहे कुछ भी कहें मैं तो स्पष्ट देखती हूँ कि नए लड़के-लड़कियों का सोचने का ढंग बादल ज्ञ है,वे कुछ ज्यादा उदार,खुले हुए मन के हो गए हैं।' अतः मीनाक्षी के मन में(राजू के मामा)पुरानी पीढ़ी के प्रति आक्रोश है जोकि समय के साथ नहीं बदलते हैं। मीनाक्षी राजू और सरोज को परिवर्तन से परिचित करवाती है क्योंकि राजू और सरोज भी नयी पीढ़ी के हैं तथा उनकी सोच भी बुजुर्गों की पीढ़ी से अलग है।

शहर में श्रम जीवी मध्यम वर्ग के लिए आवासीय समस्या गंभीर बन गई है। 'बदलावसे पहले' कहानी के माध्यम से इस समस्या को चित्रित किया गया है। स्वदेश और प्रभा दोनों नौकरी करते हैं। स्वदेश जी सोचते हैं, 'दोनों कमाते हैं तो दो कमरों का मकान तो होना ही चाहिए....लेकिन एक कमरे का समान दो कमरों में बंट जाने से उनका घर पहले से भी ज्यादा खाली-खाली लाग्ने लगा। खालीजगहेंदूसरेघरों से अपनी तुलना करती हुई चीजों की मांग करने लगी। उधर ढाई सौ किराय में,तीस-चालीस बिजली-पानी वगेरह मैं और सौ रुपए बच्ची केक्रैश की फीस में ''स्वदेश जी की पूरी तनखाखर्च होने लगी हालत वही पहले वाली रही। घर का खर्च प्रभा जी की तनखासे ही चलता और स्वदेश जी को लगता कि वे अभी तक मानों बेरोजगार ही हैं।'इस प्रकार आम आदमी का दैनिक जीवन कठिनाइयों का घर बन चुका है। जिस समाज में मध्यवर्गीय व्यक्ति कि अतीति ऐसी हो वहाँ पर बेहद गरीबी,दाने-दाने को मोहताज निम्न वर्गीय व्यक्ति कि स्थिति क्या होगी!इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

अंतत: कहा जा सकता है कि रमेश उपाध्याय ने अपने कथा साहित्य में समग्र समाज का वर्गीकरण बड़े ही सुंदर ढंग से किया है। आज वर्ग के बदलते अर्थ के कारण ही शोषक वर्ग बौखलाया रहता है,राजकीय सहायता लेने पर भी वह वर्ग के बदलते अर्थ को रोकनहीं सकता। बड़े-बड़े दफ्तरों में अधिकारी चाहे देर तक काम करते रहें,परंतु चपरासी निश्चित घंटो से अधिक काम नहींकरता। अतः जमींदारी प्रथा के साथ-साथ बेरोजगारी प्रथा का भी अंत हो गया है। रमेश उपाध्याय ने कथा-साहित्य में वर्ग-चेतना को नयी दिशा दी है,जिससे समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. Encyclopedia of Social Sciences. Vol III page 536।
2. Gordenleff, History and Social theory page, 176-77।
3. सुखवीर सिंह,हिन्दी कविता की समकालीन चेतना,पृ० 146।
4. कुमार कृष्ण,हांक,जनवरी,89 पृ०4।
5. नगेंद्र मानविकी पारिभाषिक कोष,पृ०166।

6. धीरेन्द्र वर्मा सं०,हिन्दी साहित्य कोश,भाग-1,पृ०918।
7. दीपायन बोस,अनश्वर है सर्वहारा संघर्षों की अग्निशाखाएँ,पृ०10।
8. ओमवाती सक्सेना,मार्क्सवादी चेतना परक हिन्दी उपन्यास,पृ०20।
9. रमेश उपध्याय,राष्ट्रिय राजमार्ग,पृ०66,72,73।
10. रमेश उपध्याय,बदलाव से पहले,पृ०46-47,71,102-103,116।
11. रमेश उपध्याय,शेष इतिहास,पृ०126-127।
12. रमेश उपध्याय,किसी देश के किसी शहर में,पृ०67,70,92।
13. रमेश उपध्याय,चतुर्दिक,पृ०38,66।
14. रमेश उपध्याय,पैदल अंधेरे में,पृ०77-78।
15. रमेश उपध्याय, 'दण्डद्वीप',पृ०156।